IJAER/July-August 2023/Volume-12/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

रसायनशालाओं द्वारा उत्पादित आयुर्वेदिक औषधियों के भौतिक स्वरूप का एक अध्ययन

डा0 पूनम गुप्ता
अर्थशास्त्र विभाग (पूर्व शोधार्थिनी)
D.S college Aligarh (UP)

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में आयुर्वेदिक रसायनशालाओं में उत्पादित विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों के भौतिक स्वरूप का विस्तारपूर्वक अध्ययन निम्न शीर्षकों– आसव अरिष्ट, घुट्टी/शर्बत, अवलेह, चूर्ण, जुसॉदा/क्वाथ (काढ़ा), भस्म सौन्दर्य सम्बन्धी उत्पाद एवं अन्य उत्पाद के आधार पर किया गया है। वेदों में औषध तथा आहार द्रव्यों का प्रचुरता से उल्लेख मिलता है। चिकित्सा की दृष्टि से वेदों में अथर्ववेद सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद को अथर्ववेद का ही उपवेद माना गया है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय तथा शाड्र्गधर संहिता इत्यादि आयुर्वेदीय ग्रन्थों में से अधिकांश में आयुर्वेदीय औषधि निर्माण की विधियों या कल्पनाओं को (1) स्वरस, (2) कल्क, (3) श्रुत (क्वाथ), (4) शीत (हिम) तथा (5) फाण्ट के रूप में आधारभूत मौलिक कल्पना को पंचविध कषाय कल्पना के रूप में स्वीकार किया गया है, जो एक ही औषधि की विभिन्न शक्तियों वाली अनेक कल्पनएँ हो सकती है। ये उत्तरोत्तर लघु (पाचन में हल्की) तथा क्रमश यथापूर्व बलवान होती है. इसलिये ये रोग तथा रोगी के बल की अपेक्षिणी होती है तथापि ये सभी पाँचों कल्पनाएँ रोगी तथा रोग के बल के अनुरूप, चिकित्सक को औषधि सहज ही प्राप्त हो सके और चिकित्सा में विविधता उत्पन्न हो सके तथा यदि किसी औषधि की कोई कल्पना रोगी पर प्रभावी न हो, तो उसी कार्य के लिये उसी औषधि की दूसरी कल्पना निर्माण करने में कोई कठिनाई नहीं हो, क्योंकि सभी कल्पनाये सभी रोगों में समानरूप से लाभकारी नहीं होती हैं। अतः एक ही औषध द्रव्य की अनेक कल्पना करना आवश्यक हो जाता हैं

मुख्य शब्द – वेद, चूर्ण, चरक, संहिता, अपरांग, स्वरस आदि

प्रस्तावना–पंचकषाय कल्पनाएँ ही मौलिक कल्पनायें हैं। अन्य सभी कषाय–कल्पनाएँ आवश्यकतानुसार इन्हीं से सम्पन्न हुई और उनका समावेश भी इन्ही मौलिक कल्पनाओं में किया जाता है। मौलिक कल्पनाओं के विकास के पश्चात कुछ अन्य समस्याएँ थी जिनके निवारण के लिये अन्य कल्पनााओं की आवश्यकता हुई–

1. पंचकषाय कल्पना की सवीर्यता अवधि का कम (मात्र एक दिन या तत्काल) होना।
2. औषधियों की सर्वकालिक उपलब्धता का अभाव।
3. औषधियों के विभिन्न अंगो की विभिन्न ऋतुओं में उपलबधता। जैसे फल–पुष्ट आदि
4. औषधियों के विभिन्न अंगों की विभिन्न स्थितियों में ग्राह्म। जैसे पक्वक–अपक्व फल या कोपल (नवीन पत्र) अथवा पक्व पत्र के ग्रहण का विधान होना।
5. औषधियों की सार्वदशीय उपलब्धता का अभाव होना।

6. रोगी के आने पर तुरन्त औषधि की अनुपलब्धता।

इन समस्याओं के कारण तत्कालीन चिकित्सा समाज को अनुसन्धान एवं शोध के लिये चिन्तित किया जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान काल में उपलब्ध सभ्झी कल्पनाओं की उत्पत्ति हुई। इन कल्पनाओं द्वारा सभी वानस्पतिक पार्थिव (खनिज) तथा जान्तव (प्राणिज) द्रव्यों के मौलिक गुणों का संरक्षण करते हुये शरीर की पुष्टि एवं रोग निवारण के लिये सेवन योग्य बनाया जाता है। आयुर्वेदीय चिकित्सा की अपर्ष–परम्परा में आरम्भ में मुख्य रूप से वानस्पतिक द्रव्यों का उपयोग होता था। वैदिक काल में इन कल्पनाओं का विशेष विकास नहीं था। संहिता काल में कषाय कल्पना के नाम से मूलभूत भेशज्य कल्पना के विज्ञान का क्षेत्रो अति विकसित हुआ। खनिज द्रव्यों का उपयोग भी संहिता काल में प्रारम्भ हो चुका था। संहिता काल में रसायन प्रभाव के लिये वनस्पतियों का विशेष तथा कुछ खनिज स्रोत के द्रव्यों का भी उपयोग किया जाता था। किन्तु खनिज द्रव्यों से निर्मित औषधियों का प्रयोग क्षेत्र सीमित था। इसका मुख्य कारण खनिज द्रव्यों का स्वभाव से विषैलाा होना था। शोधन एवं भारण (भस्मीकरण) जैसी विधियाँ मध्यकाल में विकसित हुई, जिनसे उपचारित (Treated) होकर खनिज द्रव्य दोषमुक्त एवं वधगुण सम्पन्न हो जाते है।

प्रकृति में प्राप्त सभी द्रव्यों का उनके मूल स्वरूप में ही सेवन नहीं किया जा सकता है, अतः द्रव्यों के मूल स्वरूप को नष्ट कर सेवन योग्य बनाना ही औषध या आहार कल्पना कहलाती है। आयुर्वेद में सामान्यतः स्वस्थ व्यक्ति के लिये आहार कल्पना तथा रोगी के लिये पथ्य कल्पना आहार के रूप में तथा औषध के रूप में वानस्पतिक, प्राणिज एवं खनिज द्रव्यों से औषध कल्पना की जाती हैं अतः भैषज्य कल्पना तथा रसशास्त्रीय (पारा आदि खनिज द्रव्य विज्ञान) भैषज्य कल्पना के रूप में समस्त द्रव्यों से औषधि निर्माण का प्रचलन है, इसलिये आयुर्वेदीय औषधियाँ विभिन्न भौतिक स्वरूपों में वर्तमान मे ंरसायनशालाओं द्वारा उत्पादित की जा रही है। वर्तमान में प्रचलित आयुर्वेदीय औषध कल्प योग अनेक भौतिक स्वरूपों में विद्यामान है, जिनकी स्वीर्यतावधि भी अलग–अलग होती है, अतः संक्षेप में इन औषध कल्पों का परिचय जानना आवश्यक प्रतीत होता है।

(i) आसव–अरिष्ट, घुट्टी / शर्बत

आसव–अरिष्ट किसी पात्र में जल, स्वरस, हिम आदि द्रव्य में गुण, शर्करा, शहद तथा अन्य सुगन्धित काष्ठौषधियों का यवकूट चूर्ण एवं अन्य आवश्यक काष्ठीषधि तथा उचित मात्रा में घातकीपुष्ट एवं किण्व (ल्मेंज) आदि डालकर पात्र का मुँह बन्द कर निर्वात स्थान में 15–20 दिन या नियत काल तक रखने पर पात्र में स्थित द्रव्य में किण्वीकरण की क्रिया से वह द्रव्य मद्य य शुक्त रूप में परिणित हो जाने को सन्धान कल्पना कहते है। इस प्रक्रिया में यदि अपक्व जल का प्रयोग किया जाये, अर्थात काष्ठौषधियों को जल में डालकर पकाया नहीं जाये तो बनने वाले औषध द्रव्य को आसव कहते हैं।

अरिष्ट - काष्ठौषधियों का यवकूट चूर्ण बनाकर जल में पकाकर (क्वाथ), उस क्वाि को मिट्‌अी के घड़े या अन्य किसी पात्र रखकर, निर्दिष्ट मात्रा में गुण, शर्करा, शहद मिलाकर अन्य सुगन्धित काष्ठीषधियों का यक्कूट पूर्ण एवं किन्द (तमदज) मिलाकर समशीतोष्ण एवं निर्वात स्थान में निश्चित समय तक स्थिर रखकर सन्धान के बाद कपड़े से छानकर प्राप्त होने वाले मद्य युक्त द्रव्य को अरिष्ट कहते हैं। अरिष्ट में संस्कारवश गुणाधान अधिक होता है तथा यह आसव की अपेक्षा शीघ्र नष्ट (खराब) नहीं होता है इसलिये इसे अरिष्ट कहते हैं। जैसे अश्वगन्धारिष्ट, पंचारिश्ट कुमार्यासय, लोहासब आदि।

घुट्टी/शर्बत - काष्ठौषधियों का यवकूट चूर्ण बनाकर जल में पकाकर क्वाथ करके, क्वाथ को छानकर प्राप्त क्वथित द्रव्य में शर्करा (चीनी) मिलाकर मन्द अग्नि पर पकाने पर, जब चीनी द्रव्य में घुल जाये तथा कुछ गाढ़ा होने पर अग्नि से उतारने पर प्राप्त होने वाले मीठे द्रव्य को शर्बत (शर्कर) कहते हैं।

घुट्टी- बच्चों के सामान्य रोगों की चिकित्सा के लिये एवं पाचन क्रिया को सामान्य बनाये रखने के लिये कुछ विशिष्ट औषधीय द्रव्यों से बनाये जाने वाले शर्बत को घुट्टी कहते हैं। प्राचीन काल में तथा वर्तमान में भी अधिकांश घरों में यह घरेलू उपचार के रूप में प्रयोग में ली जाती है। अलीगढ़ जनपद में 112 वर्ष की बुढ़िया की छुट्‌अी, बालजीवन घुट्‌अी, गुगली घुट्टी, 556 मुट्टी इत्यादि की मॉग सम्पूर्ण देश में की जाती है।

(ii) अवलेह, चूर्ण, जुसांदा/क्वाथ (काढ़ा एवं भस्म

टवलेह - औषधियों या जड़ी–बूटियों के स्वरस, क्वाथ, हिम, फाण्ट आदि कषायों को पात्र में रखकर पुनः अग्नि पर पकाकर गाढ़ा करने पर बनने वाली औषधि को रसक्रिया, अवलेह या लेह कहते है। ऐसा भोजय पदार्थ जिसे चाटकर खाया जाय उसे अवलेह कहते है। अवलेह दो प्रकार से बनाये जाते है।–

1. स्वरस या क्वाथ आदि को अग्नि पर पुनः पकाकर गाढ़ा करके फिर उसमें चूर्ण आदि को मिलाकर अवलेह का निर्माण करना। इसमें गुण, शर्करा, मिश्री आदि पदार्थ मिलाना आवश्यक नहीं हैं
2. स्वरस, क्वाथ आदि में गुण, शर्करा या मिश्री मिलाकर अग्नि पर पकाकर, दो तार की चासनी बनने पर अग्नि से उतारकर उसमें चूर्ण आदि मिलाकर बनाये जाने वाले अवलेह जैसे च्यवनप्राशावलेह, वासावलेह आदि।

चूर्ण - अत्यन्त सूखे द्रव्य एवं जड़ी–बूटियों को अच्छे से सुखाकर एवं साफा करके लबटे से अच्दी तरह पीसकर या इमामदस्ते में कटकर अथवा डिसिन्टिग्रेटर में पीसकर महीन कपड़े में छानने पर प्राप्त होने वाले छनित बारीक द्रव्य को चूर्ण कहते है। चूर्ण को ही रज एवं क्षोद भी कहते हैं पल्वसईजर मशीन द्वारा बनाये जाने वाले चूर्ण को कपड़े या छलनी इत्यादि से छानने की आवयश्यकता नहीं होती।

जुसादा/क्वाथ (काढ़ा) - सूखे अथवा आर्द्र (गीले) द्रव्य को यवकुट (मोटे यव के बराबर मोटा चूर्ण या टुकड़े) करके जल के साथ उबालकर छानने के बाद जो द्रव्य कल्प तैयार किया जाता है उसे ही जुसादा कहते है।

क्वाथ – क्वाथ रोगियों को पिलाने के अलावा अवगाहन, परिषेचन, आश्योतन (आँख में नेत्र बिन्दु डालना) व्रणप्रक्षालन (घाव धाने), घृत तथा तेल पाक करने, आसव–अरिष्ट निर्माण के लिये, अवलेह रसक्रिया निर्माण के लिये तथा अन्य औषध कल्पों के निर्माण के लिये भी प्रयोग में लिया जाता है। दशमूल क्वाि, महारास्नादि क्वाथ गोजिहवादि क्वाथ इत्यादि बहुप्रचलित क्वाथ है।

निष्कर्ष - प्राणिज, खनिज, किसी भी द्रव्य को शोधन के बाद किसी वानस्पकि स्वरस, क्वाथ, जल, गुलाबजल, या अन्य किसी द्रव्य के साथ घोटकर टिकिया बनाकर धूप में सुखाकर मिट्टी के पात्र में रखकर, पात्र का मुँह बन्द कर, उपलों के बीच में रखकर पकाकर बनाये जाने वाले पूर्ण को भस्म कहते हैं भस्म शब्द का

सामान्य अर्थ जलाना होता है, लेकिन आयुर्वेद रसायनशालाओं में द्रव्य को इस प्रकार जलाया जाता है कि वह राख नहीं बने अर्थात् उस द्रव्य के औषधीय गुण सुरक्षित रहें। शंख भस्म, मोती भस्म, प्रवाल भस्म इत्यादि प्राणिज भस्में तथा स्वर्ण भस्म, लौह भस्म, ताम्र भस्म, नाग भस्म, वग भस्म, हीरा भस्म, मण्डूर भस्म इत्यादि धातु भस्म, अभ्रक भस्म, कसीस भस्म, हरताल भस्म, गोदन्ती भस्म इतयादि खनिज भस्में हैं। वानस्पतिक धातु तथा खनिज पदार्थों से युक्त भस्म आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की विशिष्ट भेशय कल्पना है। जो अत्यल्प मात्रा में अत्यन्त प्रभावकारी औषधि के रूप में प्राचीनकाल से प्रयुक्त हो रही है फिर भी वैज्ञानिक आकलनात्मक अध्ययनों का भस्मों के सन्दर्भ में पर्याप्त अभाव ही हैं मेरे इस शोध पत्र के बाद समाज को नया मार्ग दिखेगा ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1. www.plannigcommison.org
2. www.economictimes.com
3. www.depttofayush.gov.in
4. www.nmpb.nic.in